किसान खेती
वर्ष–3, अंक–1 (जनवरी–मार्च), 2016
www.kisaankheti.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© 2016 kisaankheti.com
ई-आईएसएसएन:2348-2265

मुसब्बर या ग्वारपाठा के गुण, रोग एवं रोकथाम

सुनीता चन्देल* और विजय कुमार
पादप रोग विज्ञान विभाग, डॉ. वाई. ऐस. परमार उद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, नौणी, सोलन, हिमाचल प्रदेश 173230
*संवादी लेखक का ईमेल: vnarwal777@yahoo.com

औषधि की दुनिया में इसे संजीवनी भी कहा जाता हैं। ग्वारपाठा में लगने वाले प्रमुख रोग मुसब्बर रतुआ रोग, जीवाणु गीली सड़न, ऐन्थ्रेक्नोज़ पत्ती धब्बा रोग, मलानी रोंग या विल्ट, पत्ती धब्बा और सिरा झुलसा रोग व गोलाकार धब्बे हैं। जिसके रोकथाम के उपाय संक्षेप में इस लेख में उल्लेखित हैं।

भारत में ग्वारपाठा या घृतकुमारी हरी सब्जी के नाम से प्राचीनकाल से जानने वाला कांटेदार पत्तियों वाला पौधा हैं, जिसमें रोग निवारण के गुण कूट–कूट कर भरे पड़े हैं। यह भारत के गर्म प्रांतों में पाया जाने वाला एक बारहमासी पौधा हैं और लिलिएसी परिवार से संबंधित हैं। आयुर्वेद में इसे घृतकुमारी की उपाधि मिली हुई हैं तथा महाराजा का स्थान दिया गया हैं। औषधि की दुनिया में इसे संजीवनी भी कहा जाता हैं। इसकी 200 जातियां होती हैं, परंतु 5 जातियां ही मानव शरीर के लिए उपयोगी हैं। यह जहां बवासीर, डायबिटीज, गर्भाशय के रोग, पेट की खराबी, जोड़ों का दर्द, त्वचा की खराबी, मुंहासे, रूखी त्वचा, धूप से झुलसी त्वचा, झुर्रियों, चेहरे के दाग–धब्बों, आंखों के काले घेरों, फटी एड़ियों के लिए यह लाभप्रद हैं वहीं दूसरी तरफ यह खून की कमी को दूर करता हैं तथा शरीर की रोग–प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता हैं। पत्तियों का रस माइकोबैक्टीरियम क्षयरोग के विकास को रोकता हैं। यह एंटीइन्फ्लामेंटरी, एंटीसेप्टिक, एंटी अलसर, एंटी टूमओर और मधुमेह के उपचार में कारगर हैं। अर्द्ध ठोस जेल कॉस्मेटिक, क्रीम, लोशन और शैम्पू में प्रयोग किया जाता हैं। यह विकिरण प्रेरित घावों के उपचार में कारगर हैं।

यह पौधा विभिन्न प्रकार के रोगों दवारा ग्रसित होता हैं। हर एक मौसम में रोग इन पर पनपते हैं तथा इनको प्रभावित करते हैं। इस पौधे के मुख्य रोग एवं निवारण नीचे दिये गए हैं।

गोलाकार धब्बे

लक्षण: यह एलोवेरा का एक गंभीर रोग हैं। गोलाकार धब्बे पौधे के पत्तों पर प्रमुख होते हैं। यह बीमारी पहली बार हचोजिमा और चिचिजिना, टोक्यो के समुद्री टापुओं पर पाई गए थी। धब्बों के ऊपर हेमटोनेक्टेरिआ हेमटोकोका के कोनिडिया आसानी से देखे जा सकते हैं।

कारण जीव: हेमटोनेक्टेरिआ हेमटोकोका

नियंत्रण: संक्रमित पौधों को नष्ट करना, प्रतिरोधी किस्मों का प्रयोग करना और मैन्कोजेब (0.25%), थिओफिनेट मिथाईल (0.1%), या कार्बेन्डाजिम (0.1%) के छिड़काव दवारा इसका नियंत्रण किया जा सकता हैं।

पत्ती धब्बा और सिरा झुलसा रोग

लक्षणः यह रोग बरसात के मौसम में आम हैं। पत्तियों पर हल्के भूरे रंग के गोल धब्बे बन जाते हैं जिनके चारों तरफ निचली सतह पर पीले घेरे होते हैं। उग्र प्रकोप से तने तथा पुष्प शाखाओं पर भी धब्बे बन जाते हैं। इस रोग से पत्तों का ३०–४० फीसदी क्षेत्र धब्बों के द्वारा संकर्मित होता हैं। यह रोग पतियों के मुड़ने और झड़ने का कारण बनते हैं तत्पश्चात सूखने के कारण के पौधे से गिर जाते हैं।

कारण जीवः अलटरनेरिआ अलटरनाटा

नियंत्रणः पौधा के मलबे को नष्ट करें और रोग को कम करने के लिए कैप्टान (0.2%), मैन्कोजेब (0.25%) या हेक्साकेप (0.2%) के साथ नियमित रूप से छिड़काव करें।

मलानी रोंग या विल्ट

लक्षणः यह फुज़ेरियम नामक कवक से फैलता हैं। यह पौधो में पानी व खाद्य पदार्थ के संचार को रोक देता हैं। जिससे पंत्तियां पीली पडकर सूख जाती हैं और पौधा सूख जाता हैं। इसमें जड़े सड़कर गहरे रंग की हो जाती हैं तथा छाल हटाने पर जड से लेकर तने की ऊँचाई तक काले रंग की धारियां पाई जाती हैं।

कारण जीवः फुज़ेरियम सोलेनाई

नियंत्रणः एकान्तिरित खेती, मृदा सौरीकरण, ग्रसित पौधों को उखाड़ कर खत्म करना या बिनोमिल (0.1%), कार्बेन्डाजिम (0.1%) और कैप्टान (0.1%) के घोल से पौधों को उपचारित करना मिट्टी से उपजित बीमारी को कम करने में मदद कर सकते हैं।

ऐन्थ्रेक्नोज़ पत्ती धब्बा रोग

लक्षणः इस रोग से पौधे में पानीनुमा, हल्के भूरे और थोड़ा धसे हुए धब्बे बनते हैं। यह धब्बे सामान्यतः २–३ से०मी० व्यास के होते हैं। पत्तों के सिरों इससे जले हुई दिखाए देते हैं।

कारण जीवः कोलेटोट्रिईकम डेमाटीसियम

नियंत्रणः कॉपर और कैप्टॉन कवकनाशी का प्रयोग 12–14 दिनों के अंतराल पर बीमारी को नियंत्रित करने के लिए करें।

जीवाणु गीली सड़न

लक्षणः शुरआती लक्षण पत्तों पर बरसात के दिनों में पानीनुमा धब्बों के रूप दिखाई देते हैं। पौधे में सड़न निचे से उपर की और तेजी से बढ़ती हैं। इससे पौधा २–३ दिन में मर जाता हैं।

कारण जीवः पेक्टोबैक्टेरियम क्रीईसंथेमी

नियंत्रणः रोपण क्षेत्र को सुखा कर रखें। उपरी सिंचाई के बिना नियंत्रित सिंचाई काफी प्रभावी होती हैं। इससे जीवाणु कण आसानी से फैल नहीं पाते हैं। छिड़काव के रूप में एंटीबायोटिक, स्ट्रिप्टोसाइक्लीन (300 मि०ग्राम० एक लीटर पानी) का प्रयोग संक्रमण को कम करता हैं।

मुसब्बर रतुआ रोग

लक्षणः इस रोग द्वारा मुसब्बर की पत्तियों पर रतुआ से उत्पन काले और भूरे रंग के फफोले दिखाई देते हैं।

कारण जीवः फकोस्पोरा पेचयर्हिज़ी

नियंत्रणः जुलाई–सितंबर के दौरान डाइथेन जेड–78 (0.2%), या वेटएबल सल्फर (0.4%) के तीन छिडकाव करें। इस रोग की रोकथाम के लिए मैन्कोजेब २.५ किग्रा. अथवा घुलनशील गंधक ३ किग्रा. प्रति हेक्टेयर की दर से छिडकाव करें।